वैश्विक पटल पर हिंदी

सम्पादक
डॉ. रमा

वैश्विक पटल पर हिंदी

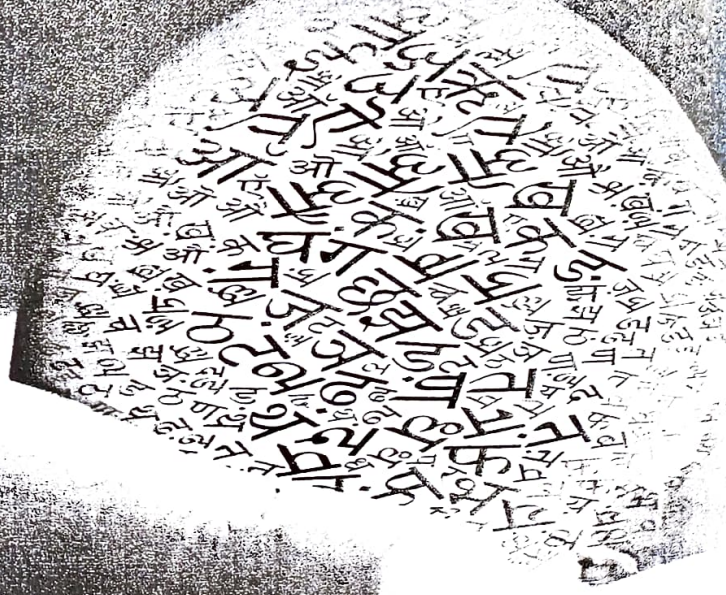

डॉ. रमा

संचय

© लेखक

ISBN : 978-93-88011-10-5

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 1195/- (2 भागों में सम्पूर्ण) **(भारत, नेपाल)**
मूल्य : $ 55/- (अन्य देश)

VAISHVSHIK PATAL PAR HINDI
Part-1
Edited by Dr. Rama

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी — 192
डॉ. मीनु कुमारी

31. वैश्वीकरण में हिंदीमय संसार — 198
अनामिका

32. वैश्विक पटल पर हिन्दी के प्रसार में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की भूमिका — 203
डॉ. दर्शना देवी

33. वैश्विक पटल पर हिन्दी — 211
रेखा देवी

34. वैश्विक पटल पर हिंदी — 217
सरला कुमारी

35. वैश्विक पटल पर हिन्दी सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ — 223
सोन किरण शर्मा

36. हिन्दी में है वैश्विक भाषा बनने की क्षमता — 229
श्री सुरेश कुमार

38. अन्तरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी — 234
श्रीमती हीरा अन्ना

39. वैश्विक पटल पर हिन्दी की चुनौतियाँ — 237
डॉ. कंचन

40. पुर्ननव हो रही हिंदी — 245
राकेश कुमार

41. विश्व में हिन्दी — 251
डॉ. मीना

42. विश्व में हिन्दी के बढ़ते कदम — 256
डॉ. नीतू परिहार

43. मॉरीशस में हिन्दी की स्थिति और विस्तार — 262
डॉ. रजत रानी आर्य (मीनू)

44. मॉरीशस के प्रवासी साहित्यकार : ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर' के काव्य में भारतीयता — 268
डॉ. अनिल कुमार

45. विश्व स्तर पर हिन्दी के विकास में अनुवाद की भूमिका — 279
सतीश कुमार भारद्वाज

विश्व में हिन्दी के बढ़ते कदम

डॉ. नीतू परिहार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, मो.ला.सु.विवि. उदयपुर, राजस्थान
ई-मेलः neetuparihar11@gmail.com

भाषा केवल विचार विनिमय का माध्यम नहीं होती, बल्कि स्वयं में एक पूरी संस्कृति होती है, इसलिए जैसे-जैसे संस्कृति में परिवर्तन आता है, वैसे-वैसे भाषा में भी परिवर्तन आता है। आज सारा विश्व एक उपभोक्तावादी भौतिक व्यवस्था में साँस ले रहा है। लगभग सभी राष्ट्र विज्ञान, तकनीक, औद्योगीकरण, यांत्रिकता और अंतरराष्ट्रीय बाजार दर्शन से प्रभावित एवं संचालित है। आश्चर्य उस पर ये कि इसे ही आधुनिकता माना जा रहा। हम सब इस आधुनिक संस्कृति में जीने को विवश हैं।

भारत के बड़े हिंदी भू-भाग में बड़ी उथल-पुथल मची हुई है। इसका एक बड़ा कारण अँग्रेजी भाषा के बढ़ते कदमों को माना जाता है। अपने ही घर में हिंदी दूसरी भाषा के ताकत से जूझ रही है। हिंदी का संकट भाषाई संकट कम सांस्कृतिक अधिक है। हमारी संस्कृति के प्रबल प्रवाहक लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोकवार्ताएँ तेजी से लुप्त हो रहे हैं। लोकमंगलाचार, त्योहार, रीति-रिवाज़ आदि हमारे जीवन से दूर होते जा रहे हैं। साइबर क्रांति ने संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, साहित्य और सामाजिक मूल्यों को नष्ट करने का जैसे ठेका ले लिया है। यह संकट संस्कृति का तो है ही, गौर से देखें तो यह हिंदी और हिंदी समाज का भी संकट है। हिंदी भारतीय संस्कृति की वाहक है। सन् 1947 में भारत स्वतंत्र होने पर बी बी सी लंदन द्वारा माँगे गए संदेश के उत्तर में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा दिया गया केवल एक वाक्य का संदेश– "दुनिया से कह दो कि गाँधी अँग्रेजी भूल गया।"[1]

भारत प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों और परंपराओं में विश्व का अग्रणी राष्ट्र रहा है। प्राचीन भारतीय चिंतकों ऋषि-मुनियों, विचारकों व विद्वानों ने देश में सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक-धार्मिक-आध्यात्मिक इत्यादि क्षेत्रों में ऐसी गतिविधियों की नींव रखी जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होकर अक्षुण्ण परंपराओं के कालक्रम में सदैव जीवंत रही है। यही कारण था कि समय-समय पर